

† محترمہ کہکشاں پروین (بہار): مہودے، میں بھی مائینے سدسنے کے ذریعہ اٹھائے گئے موضوع سے خود کو سمبڈ کرتی ہوں۔

श्रीमती झरना दास बैद्य (त्रिपुरा): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्रीमती सरोजिनी हेम्ब्रम (ओडिशा): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री राजाराम (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री हरिवंश (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

Poor quality of food served in the Ranchi Rajdhani Express

श्रीमती कहकशां परवीन (बिहार): बहुत-बहुत शुक्रिया सभापति महोदय। मैं एक बहुत ही गंभीर मुद्दे को सदन में उठाना चाहती हूँ। जब कोई व्यक्ति ट्रेन में यात्रा करता है, तो यात्रा करने वाला भी और जो यात्री यात्रा कर रहे हैं, उनके घर वाले भी हमेशा इसी सोच में, फिक्र में लगे रहते हैं कि यात्री अपनी मंजिल पर सही तरीके से पहुंच जाए। रांची राजधानी एक्सप्रेस के बारे में पिछले हफ्ते एक "न्यूज चैनल" ने दिखाया कि रांची राजधानी में सफर कर रहे यात्रियों को जो खाना परोसा गया, उसे खाने के बाद उनकी तबियत खराब हो गयी और उनको अस्तपाल में एडमिट करवाया गया।

सभापति महोदय, मैं आपसे यह निवेदन करना चाहूंगी कि जो मंत्री जी हैं, उनसे यह कहा जाए कि जो इसमें खाना परोसते हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। हमारी सरकार का नारा "स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत" है। हम इस पर पूरा ध्यान देते हैं। जहां पर स्वच्छता रहेगी, वहीं पर स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। इसी तरह का हाल डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस में भी है। उसमें रसोई यान नहीं है। जहां पर रसोई यान है, वहां से खाना लाकर इसके ए.सी. फर्स्ट क्लास में जो खाना परोसा जाता है और जिस तरह से खाना परोसा जाता है, यदि उसे देख लिया जाए, तो किसी की खाने की तबियत नहीं करेगी, लेकिन यात्रा करने वाले यात्री भूखे रहते हैं, इसलिए मजबूरन वे उस खाने को खाते हैं।

सभापति महोदय, मेरी मांग यह है कि डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस में रसोई यान लगाया जाए, जिससे कि उसमें यात्रा कर रहे यात्रियों को कोई परेशानी न हो। मैं सरकार और माननीय मंत्री जी को यह बताना चाहूंगी कि मैंने इस मुद्दे को पहले भी हाउस में उठाया था और इस मुद्दे को मैं आज भी उठा रही हूँ, इसको गंभीरता से लिया जाए, ताकि जो यात्रीगण सफर कर रहे हैं, उनको कोई परेशानी न हो।

†Transliteration in Urdu script.

† محترمہ کہکشاں پروین (بہار): بہت بہت شکریہ سبھاپتی مہودے۔ میں ایک بہت ہی گمبھیر مدعے کو سدن میں اٹھانا چاہتی ہوں۔ جب کوئی شخص تین میں سفر کرتا ہے، تو سفر کرنے والا بھی اور جو مسافر سفر کر رہے ہیں، ان کے گھر والے بھی ہمیشہ اسی سوچ میں، فکر میں لگے رہتے ہیں کہ مسافر اپنی منزل پر صحیح طریقے سے پہنچ جائے۔ رانچی راجدھانی ایکسپریس کے بارے میں پچھلے ہفتے ایک ”نیوز چینل“ نے دکھایا کہ رانچی راجدھانی میں سفر کر رہے مسافروں کو جو کھانا پروسہ گیا، اسے کھانے کے بعد ان کی طبیعت خراب ہو گئی اور ان کو اسپتال میں داخل کروایا گیا۔

سبھاپتی مہودے، میں آپ سے یہ درخواست کرنا چاہوں گی کہ جو منٹری جی ہیں، ان سے یہ کہا جائے کہ جو اس میں کھانا پروسے ہیں، ان کے خلاف کارروائی کی جائے۔ ہماری سرکار کا نعرہ ”موجہ بھارت اور منوستھ بھارت“ ہے۔ ہم اس پر پورا دھیان دیتے ہیں۔ جہاں پر سوچھتا رہے گی، وہیں پر سواستھ بھی تھیک رہے گا۔ اسی طرح کا حال ڈبرو گڑھ راجدھانی ایکسپریس میں بھی ہے۔ اس میں رسوئی-یان نہیں ہے۔ جہاں پر رسوئی-یان ہے، وہاں سے کھانا لاکر اس کے اے۔سی۔ فرسٹ کلاس میں جو کھانا پروسا جاتا ہے اور جس طرح سے کھانا پروسا جاتا ہے، اگر اسے دیکھ لیا جائے، تو کسی کی کھانے کی طبیعت نہیں کرے گی، لیکن یاترا کرنے والی یاتری بھوکے رہتے ہیں۔ اس لئے مجبوراً وہ اس کھانے کو کھاتے ہیں۔

سبھاپتی مہودے، میری مانگ یہ ہے ڈبرو-گڑھ راجدھانی ایکسپریس میں رسوئی-یان لگایا جائے، جس سے کہ اس میں یاترا کر رہے یاتریوں کو کوئی پریشانی نہ ہو۔ میں سرکار کو اور ماننے منٹری جی کو یہ بتانا چاہوں گی کہ میں نے اس مدعے کو پہلے بھی باؤس میں اٹھایا تھا اور اس مدعے کو میں آج بھی اٹھا رہی ہوں، اس کو گمبھیرتا سے لیا جائے، تاکہ جو یاتریگن سفر کر رہے ہیں، ان کو کوئی پریشانی نہ ہو۔

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती झरना दास बैद्य (त्रिपुरा): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्रीमती सरोजिनी हेम्ब्रम (ओडिशा): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री राजाराम (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री हरिवंश (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

SHRI VIVEK K. TANKHA (Madhya Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI MAJEED MEMON (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री संजय सेठ (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री रेवती रमन सिंह (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

**Need for recognition and grant of Central Pension to the victims of
internal emergency of 1975**

SHRI PRASANNAACHARYA (Odisha): Sir, the midnight of 25th June, 1975 was a black moment in the history of Indian democracy. Sir, 43 years ago, the internal Emergency was declared in this country, and, consequently, there were widespread agitations led by late Lok Nayak Jayaprakash Narayan to restore democracy. Many leaders were arrested and among those were Morarji Desaiji, Atalji, Advaniji, and, Sir, even the leader of the then ruling party, honourable late Shri Chandrasekharji, was also put inside the jail. Apart from these leaders, hundreds and thousands of people of this country were also put inside the jails.